| 09 ^{4,3} κ]ΑΙ [ευ]ΘΕΩΣ ΕΓ[ε]ΝΟΜΗΝ ΕΝ | 19 |
|---|----|
| 10 τω ΠΝΙ ΚΑ[ι] ΙΔΟΥ [θ]ΡΟ- | 15 |
| 11 NO Σ EKEIT Ω^7 ε N T Ω OYN Ω | 17 |
| 12 KAI ΕΠΙ ΤΟν ΘΡΟΝΟΝ ΚΑ- | 15 |
| 13 ΘΗΜΕΝΟΝ ^{8 3} ΚΑΙ Ο ΚΑΘ[η- | 15 |
| EΠΙ ΤΟΝ ΘΡΟ[νον 14 ΜΕΝΟΣ ΟΜΟΙΟΣ ΟΡΑΣΕΙ | 17 |
| Ende der Seite korrekt | |
| | |
| Text: | |
| Vorderseite | |
| Beginn der Seite korrekt | |
| αγ | |
| 01 -ω ζήλωσον οὖν καὶ μετα- | |
| 02 νόησον. ^{3,20} , Ιδοὺ ἔστηκα ἐπὶ | |
| 03 τὴν θύραν Τ εἰσελεύσο- | |
| 04 μαι πρὸς αὐτὸν καὶ δει- | |
| 05 πνήσω μετ' αὐτοῦ καὶ αὐ- | |
| 06 τὸς μετ' ἐμοῦ. ²¹ Ὁ νικῶν | |
| 07 δώσω αὐτῷ καθίσαι | |
| 08 μετ' έμοῦ έν τῷ θρόνῳ μου, | |
| 09 ώς κάγὼ ἐνίκησα | |
| 10 καὶ ἐκάθισα μετὰ τοῦ | |
| 11 πατρός μου ἐν τῷ θρόνῳ | |
| 12 αὐτοῦ. ²² Ὁ ἔχων οὖς ἀκου- | |

 ⁷ Korrekt: EKEITO.
 ⁸ Korrekt: KAΘHMENOΣ.
 ⁹ Standardtext: ζήλευε.